جنوری ۲۰۱۲ء

ماہنامہ

# شعاع عمل لکھنؤ

قَالَ اللّٰہُ تبَارَکَ وَتَعَالیٰ قَدْ جَاءَ کُمْ مِنَ اللّٰہِ نُوْرٌ وَکِتَابٌ مُبِیْنٌ

بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب



نورہدایت فاؤنڈیشن، حسینیۂ غفرانمآبؒ، چوک، لکھنؤ۔۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postel Regd.No. SSP/LW/NP-75/2011-13 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

# SHUA-E-AMAL
Lucknow

# शुआ-ए-अमल
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

January 2012






**NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION**

Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Ph.:0522-2252230

बिस्मेही तआ़ला

वर्ष 8 — अंक 7

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की

इस्लामी, ज्ञान व शोध

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

**जनवरी 2012**

# शुआ-ए-अमल

"लखनऊ"


न्यास संस्थापन

15 जमादिलऊला 1424 हि० / 16 जुलाई 2003 ई०

पत्रिका विमोचन

15 जमादिलऊला 1425 हि० / जुलाई 2004 ई०





**मिलने का पता**

## नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक, लखनऊ - 3

Phone No: 0522-2252230 — 0522-4062731 Mobile No: 09335276180 — 09335996808

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ-ए-अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ-3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै० मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़ जाएसी'।

Per copy 20/-

Annual 200/-




R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526





Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10





**WEBSITE:**
www.noorehidayatfoundation.com
www.al-ijtihaad.com





**E_mail:**
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com



## वार्षिक अंशदान

1- यूरोप, अमरीका, कनाडाः
80 अमरीकी डालर
2- ख़लीजी मुमालिकः
60 अमरीकी डालर
3- एशिया, पाकिस्तानः
40 अमरीकी डालर
4- पाकिस्तान ज़मीनी डाकः
20 अमरीकी डालर
**लाइफ़ मेम्बरशिपः 4000/-**


# विषय सूची

**जनवरी 2012 ई०**
**सफ़रुल मुज़फ़्र 1433 हि०**

# करबला का आफ़ाक़ी पैग़ाम

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद नक़वी, जनरल सेक्रेट्री मजलिस उलमा-ए-हिन्द

(1)

कुछ इन्सानी अक़दार ऐसी हैं जो आफ़ाक़ी, जावेदां, नाक़ाबिले तग़ैय्युर व तबद्दुल और दूसरी लफ़्ज़ों में ज़मान व मकान से फ़रोतर होती हैं। उन्हीं में से एक आज़ादी की तमन्ना और ग़ुलामी से नफ़रत है, मगर कभी-कभी इन्सान को मज्बूरन ग़ुलामी इख़्तियार करना पड़ जाती है और इसका सबब कभी तो मौत का ख़ौफ़ होता है और कभी दुनिया की तमा और लालच। ज़िंदगी से मोहब्बत, मौत का ख़ौफ़ उसे ज़िल्लतो ख़्वारी की ज़िंदगी गुज़ारने पर मजबूर कर देता है। वह चाहता है कि ज़िंदा रहे चाहे ज़लील होकर चाहे ग़ुलाम बनकर, लेकिन इमाम हुसैन[अ०] ने मदीने से लेकर करबला तक क़दम-क़दम पर यही दर्स दिया कि ज़िंदगी उस वक़्त तक जीने के लायक़ है, जब तक वह इ़ज़्ज़त के साथ हो वरना ज़िल्लत की ज़िंदगी से इ़ज़्ज़त की मौत बेहतर है। जियो तो आज़ाद रहकर जियो, वरना मौत को ख़ुशी-ख़ुशी गले लगा लो।

जब इमाम हुसैन[अ०] मदीने से मक्के की तरफ़ हिजरत फ़रमा रहे थे तो कई लोगों ने मश्वरा दिया कि यज़ीद की बैअत करके अपनी जान बचा लीजिए, मगर मौला ने सख़्ती से जवाब दियाः ''मुझे ज़िल्लत की ज़िंदगी मंज़ूर नहीं'' जब मदीना मुनव्वरा के गवर्नर वलीद ने इमाम[अ०] को अपने क़स्र में बुलाया और यज़ीद के लिए बैअत तलब की तो आप ने यज़ीद में पाई जाने वाली ख़राबियाँ बयान फ़रमाईं और नुमाइन्द-ए-इलाही की हैसियत से अपनी ज़िम्मेदारियाँ बयान फ़रमाईं और आख़िर में एक तारीख़ी जुमला इरशाद फ़रमाया, ''मुझ जैसी कोई भी शख़सियत (मौत के ख़ौफ़ या दुनिया की तमा में आकर) यज़ीद जैसों की बैअत नहीं कर सकती''। मरवान ने भी इमाम[अ०] को समझाने की कोशिश की। मरवान की बातों का ख़ुलासा यह था कि क्यों दर्दसरी मोल ले रहे हैं। काफ़ी बड़ा वज़ीफ़ा मिलेगा, हो सकता है कोई बड़ा ओहदा भी मिल जाए। आपको नमाज़ें पढ़ने से, रोज़े रखने से, हज पर जाने से कौन रोक रहा है। ख़ूब कारे ख़ैर कीजिए। जितना दिल चाहे सवाब कमाइए। दीन भी आपका होगा, दुनिया भी आपकी होगी। दुनिया में किसी भी मसलक या मज़हब से तअल्लुक़ रखने वाली अकसरियत का तर्ज़े फ़िक्र और तरीक़-ए-अमल यही है कि जिसकी नुमाइंदगी मरवान कर रहा था और यज़ीद के ज़माने में मिल्लते इस्लामिया की अक्सरियत ने यही तर्ज़े अमल इख़्तियार कर लिया था, लेकिन इमाम हुसैन[अ०] ने जवाब में वह आयत तिलावत फ़रमाइ जो उमूमन किसी की मौत पर पढ़ी जाती है- ''हम सब अल्लाह ही के लिए हैं और उसी की बारगाह में वापस जाने वाले हैं''। (सूरए बक़रा, 156) अलल इस्लाम अगर उम्मत का रहबर यज़ीद जैसा हो तो इस्लाम का ख़ात्मा पढ़ लेना चाहिए, यानी इस्लाम के बाक़ी रहने की कोई उम्मीद नहीं रह जाएगी।

आज भी अक्सर मुसलमान मुल्कों की ज़िल्लत और ख़्वारी का बुनियादी सबब यही मौत का ख़ौफ़ और दुनिया की तमा है, यही वजह है कि अमरीका और उसकी हलीफ़ ताक़तें तक़रीबन पूरे आलमे इस्लाम पर क़ाबिज़ हो चुकी हैं। जब मफ़ाद परस्त मुसलमान रहनुमाओं और मोलवियों के सामने यह ज़मीनी हक़ीक़त पेश होती है तो (बहुत माज़रत के साथ यह जुमला लिखा जा रहा है) वह शुतुरमुर्ग़ की तरह अपने सर रेत में दबाकर इस तल्ख़-तरीन वाक़िईयत ये इन्कार कर देते हैं, लेकिन अलहम्दुलिल्लाह मुसलमान अवाम में यही आज़ादी की फ़ितरी तमन्ना और ग़ुलामी से नफ़रत आहिस्ता-आहिस्ता सर उभार रही है, जिसकी बेहतरीन मिसाल मिस्र है, मगर इसी के साथ-साथ ख़तरनाक पहलू यह है कि

अमरीका इन्तेहाई चालाकी और मक्कारी से इस अवामी बेदारी को झूठी हमदर्दी और मदद करने के बहाने हाइजेक करने की कोशिश में है और दोबारा ग़ुलामी की ज़ंजीरों में जकड़ने की कोशिश कर रहा है, जिसकी मिसालें लीबिया और यमन हैं।

करबला का आफ़ाक़ी और बुनियादी पैग़ाम इज़्ज़त की ज़िंदगी गुज़ारना और ग़ुलामी से नफ़रत करना है और यह पैग़ाम मौला ने आख़िरी सांसों तक दिया है। जब इमाम अलैहिस्सलाम 71 लाशे उठा चुके हैं जिनमें अटठारह बरस के शबीहे रसूलुल्लाह अली अकबर[अ०] की मैय्यत भी है हाथों पर छः महीने का बच्चा तीरे हुरमला का निशाना बन चुका है। ज़ख़्मों की वजह से इमाम[अ०] ज़मीन पर दराज़ हैं। उठने की ताक़त नहीं। इसी आलम में शिम्र ज़िल जौशन ने ख़ेमों पर हमला कर दिया जहाँ औरतें और बच्चे ही बाक़ी बचे थे। जब इमाम[अ०] ने यह मंज़र देखा तो बचे हुए ख़ून के क़तरों की पूरी ताक़त जमा करके आवाज़ दी "ऐ शीईयाने आले अबुसुफ़यान अगर तुम्हारा कोई दीन नहीं और आख़िरत से बेख़ौफ़ हो तो कम अज़ कम अपनी दुनिया ही में आज़ाद बन जाओ"। करबला के सारे पैग़ामात किसी एक नस्ल या किसी एक ज़माने के लिए नहीं हैं, बल्कि 61[हि०] से लेकर ता क़यामे क़यामत आने वाले तमाम ज़मानों और इन्सानों के लिए हैं। आज भी तारीख़ के उफ़ुक़ पर आपका क़ौल जगमगा रहा है और हर ग़ैरतदार इन्सान को दावते फ़िक्र दे रहा है- "ज़िल्लत की ज़िंदगी से इज़्ज़त की मौत बेहतर है"।

(बशुक्रिया रोज़नामा 'राष्ट्रीय सहारा' (उर्दू) 2 दिसम्बर 2011[ई०])

## (2)

पिछले मज़मून में अर्ज़ किया गया कि करबला ज़माने की हदबन्दियों में महदूद नहीं है और न किसी ख़ास फ़िरक़े से मख़सूस है, किसी भी मज़हब, ख़ित्त-ए-ज़मीन या किसी भी ज़माने का इन्सान हो, उसे अपने ज़मीर की पुकार का जवाब करबला में मिल जाएगा। किसी शायर ने बहुत अच्छा शेर कहा हैः-

*ये हम ने कब कहा कि हमारी है करबला*
*हक़ बात तुम कहो तो तुम्हारी है करबला*

और बहुत अच्छी बात कही गई है कि अगरचे इमाम हुसैन[अ०] अरब की सरज़मीन से तअल्लुक़ रखते थे, ख़ानदाने बनी हाशिम के चश्मो चिराग़ थे, ख़ानवाद-ए-रिसालत के एक फ़र्द थे और दीने इस्लाम के नुमाइंदे थे, मगर जिस तरह सूरज निकलता मश्रिक़ से है, मगर सारी दुनिया को रौशनी देता है, बादल उभरते समंदर से हैं, मगर हर खेत पर बरसते हैं। फूल की ख़ुश्बू किसी मज़हब या फ़िरक़े की तफ़रीक़ नहीं करती, गुलाब का फूल खिलता है किसी एक घर में मगर सारे इलाक़े को मोअत्तर कर देता है। इसी तरह से करबला में इमाम हुसैन[अ०] का पैग़ाम भी आफ़ाक़ी है और हर इन्सान उस से फ़ायदा हासिल कर सकता है।

इन्सान फ़ितरतन अम्न पसंद है, लड़ाई, झगड़ा, फ़ितना, फ़साद, ज़ुल्मो सितम उसकी तबीअत पर बार होता है, इसी के लिए क़ानून बनाए जाते हैं और उलमाए इल्मे अख़लाक़, इन्सानी अख़लाक़ के ज़ाब्ते मुअय्यन करते हैं। इन तमाम चीज़ों का मक़सद यह होता है कि फ़ितना व फ़साद मिटे और अम्न व अमान क़ायम हो। करबला का भी यही पैग़ाम है कि अम्नो अमान क़ायम हो और दुनिया से फ़साद ख़त्म हो। अगर इमाम हुसैन[अ०] के बताए हुए उसूलों और तालीमात पर सख़्ती से अमल हो तो दुनिया से जंग व जिदाल का ख़ात्मा नामुमकिन नहीं है, जिस वक़्त मदीने के गवर्नर वलीद इब्ने उतबा ने इमाम हुसैन[अ०] को अपने दारुल इमारह में बुलाया और यज़ीद की तख़्तनशीनी की ख़बर दी, साथ ही साथ बैअत का मुतालबा भी किया। इमाम हुसैन[अ०] ने इन्कार किया और उठकर जाने लगे। उस वक़्त वहाँ मरवान बिन हकम मौजूद था, उसने फ़ौरन कहा, ऐ वलीद अगर तुम ने इस वक़्त हुसैन[अ०] को जाने दिया तो यह फिर हाथ न आएंगे, लेहाज़ा या तो इन से इसी वक़्त बैअत ले ले या उनका सर काट दे। इस वक़्त इमाम हुसैन की आवाज़ बुलंद हुई और आप ने सख़्त लहजे में फ़रमाया, या इब्ने ज़ुरक़ा (ऐ नीली आँखों वाली औरत के बेटे) तेरी या वलीद की इतनी जुराअत नहीं कि रसूलुल्लाह[स०] के नवासे का सर काट सके। तारीख़ में दर्ज है कि उस वक़्त इमाम हुसैन[अ०] के साथ बनी हाशिम के कई जवान आए थे,

मगर वह दरवाज़े पर रुक गए थे और फ़क़त इमाम[अ०] अन्दर गए थे। जब इमाम[अ०] की आवाज़ बलन्द हुई और बाहर पहुँची तो इमाम हुसैन[अ०] की जान का ख़तरा महसूस करते हुए वह सब वलीद के घर में दाख़िल हो गए और इमाम हुसैन[अ०] के भाई हज़रत अब्बास[अ०] ने तलवार निकाल कर चाहा कि वलीद पर हमला करें। उस वक़्त इमाम हुसैन[अ०] ने तारीख़ी जुमला इरशाद फ़रमाया, ऐ अब्बास! रुक जाओ। हम जंग में पहल नहीं करते और जनाब अब्बास को हमला करने से रोक दिया। इस तरह करबला से कुछ पहले जब हुर के एक हज़ार लश्कर ने इमाम हुसैन[अ०] का रास्ता रोका और कहा कि इब्ने ज़ियाद का हुक्म है कि गिरफ़्तार करके कूफ़ा ले आओ, लेकिन इमाम[अ०] ने उस वक़्त भी जंग से परहेज़ किया। हालांकि इमाम[अ०] के कुछ साथियों ने मश्वरा भी दिया कि इस वक़्त दुश्मन की तादाद कम है, इन से जंग करना आसान है, बाद में तादाद बढ़ सकती है, लेकिन मौला ने वही जुमला दोहराया कि हम जंग में पहल नहीं करते और यहीं पर इमाम हुसैन[अ०] ने इन्सानियत का आला तरीन नमूना पेश करते हुए दुश्मन के लश्कर को अपना सारा पानी पिला दिया। करबला के मैदान में जब इब्ने ज़ियाद के सिपहसालार उमर इब्ने साद के लश्कर ने आकर इमाम[अ०] के क़ाफ़ले को घेर लिया तो उस वक़्त इमाम[अ०] के ख़ेमे नहरे अलक़मा के किनारे लगे हुए थे, ताकि बच्चों के लिए पानी के हुसूल में आसानी रहे, क्योंकि हुसैन के साथ बहुत छोटे-छोटे बच्चे भी थे, जिनमें एक छः महीने का अली असग़र[अ०] भी था। उमर बिन साद ने आकर इब्ने ज़ियाद का हुक्म सुनाया कि हुसैन[अ०] के ख़ेमे दरिया के किनारे से हटाकर बेआबो ग्याह मैदान में लगवाए जाएं। यह सुनते ही इमाम हुसैन[अ०] के पूरे क़ाफ़ले में कोहराम मच गया। बड़ी सख़्त मंज़िल थी, इमाम हुसैन[अ०] के लिए तपता हुआ सहरा, छोटे-छोटे बच्चों का साथ और इब्ने ज़ियाद का ग़ैर इंसानी हुक्म। इमाम के साथ आए हुए जवान बिफर गए। एलान किया कि कोई हमारे ख़ेमों को हाथ लगाकर तो देखे। इन बिफ़रे हुए शेरों को समझाना था, जिनका गुस्सा हक़ बजानिब था। इमाम हुसैन[अ०] आहिस्ता-आहिस्ता इन जवानों के सामने आए और आते ही ऐसा जुमला कहा कि सारे जवानों का गुस्सा झाग की तरह बैठ गया। फ़रमाया, "ऐ मेरे शेरों! मेरी जान तुम पर फ़िदा हो जाए। सब्र करो ख़ेमे दरिया से हटा लो, क्योंकि हमें जंग में इब्तेदा नहीं करना है।

हम तो समझते हैं कि अगर इमाम हुसैन[अ०] के इसी एक जुमले को तमाम सरबराहाने मुमालिक तहरीर करके अपने सामने रख लें और अहद कर लें कि इसी उसूल के पाबंद रहेंगे कि हम जंग में पहल नहीं करते तो जब किसी तरफ़ से जंग में इब्तेदा नहीं होगी तो दुनिया में कभी जंग भी नहीं होगी। करबला का यह एक ऐसा पैग़ाम है, जो हर ज़माने में पूरी इन्सानियत के लिए अम्न का ज़ामिन है और यहीं से बाज़ मोर्रिख़ीन और सीरत निगारों की जानिब से जो एक ग़लतफ़हमी फैलाने की कोशिश की गई है, इसकी तरदीद भी हो जाती है। वह ग़लतफ़हमी यह है कि रसूले इस्लाम[स०] के बड़े नवासे इमाम हसन[अ०] सुलह पसंद थे। उनकी तबीअत और मिज़ाज में सुलहपसंदी थी, लेहाज़ा उन्होंने सुलह फ़रमाइ और क्योंकि छोटे नवासे इमाम हुसैन[अ०] की तबीअत अम्न मुख़ालिफ़ और मिज़ाज जंग पसंद था, इसीलिए आप ने यज़ीद से सुलह करना क़ुबूल नहीं फ़रमाया और मैदाने करबला में जंग करके अपने और अपने पूरे ख़ानवादे को क़ुर्बान कर दिया। हर साहेबे फ़हम इस हक़ीक़त से वाक़िफ़ है कि अगर किसी का मिज़ाज जंग पसंद हो और अम्नो अमान उसकी तबीअत से मेल न खाता हो तो वह लड़ने में पहल करने के लिए बहाने ढूँढता है। ऊपर कितने मवाक़े बयान किए गए, जब सख़्त मिज़ाज इन्सान के लिए जंग हतमी थी, मगर इमाम[अ०] ने ज़बरदस्त क़ुव्वते बर्दाश्त का मुज़ाहेरा करते हुए जंग को टाल दिया। यह इस बात की बेहतरीन दलील है कि अल्लाह तआला का नुमाइंदा अपने अमल में मिज़ाज का पाबन्द नहीं होता, बल्कि मशीय्यत और दीन के उसूलों का पाबन्द होता है।

(बशुक्रिया रोज़नामा 'राष्ट्रीय सहारा' (उर्दू) 16 दिसम्बर 2011[ई०])

**(जारी)**

# अवध के शाहों और वज़ीरों का इमाम हुसैन[अ०] की अज़ा (शोक) में हिस्सा

**जनाब मुम्ताज़ हुसैन जौनपुरी साहब / अनुवादकः मु० र० आबिद, लखनऊ**

यह मालूमाती लेख असल में तीन लेखों का संकलन है, आधी सदी से पहले लिखा गया और मूल्यवान है। लेखक अपने समय का माना हुआ सामाजिक व्यक्तत्व था। इस लेख में 'कुछ' ताज़ियों, इमामबाड़ों और करबलाओं के चयन का मापक क्या रखा गया, नहीं पता। फिर भी कुछ महत्वपूर्ण स्मारक जैसे इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमआब, इमामबाड़ा हसन रज़ा ख़ाँ और मस्जिद मुन्सिफ़ुद्दौला की बात न आना समझ में नहीं आया। इसके अलावा भी कई जगह आँखों को कुछ खटकता है। इस लेख के लिखने के समय के बाद जो कालान्तर से तबाही या पुनिर्माण हुए वह टिप्पणी चाहते हैं। ज़रूरत है लखनऊ के ऐसे मज़हबी स्मारकों के भरपूर शोध की। इस ओर नूरे हिदायत फाउण्डेशन का ध्यान भी है। इस सम्बन्ध में जानकार लोगों से निवेदन है कि वह भी ज़रूरी मालूमात देकर हमें आभारी करें। (सम्पादक)

## नवाब शुजाउद्दौला और अज़ादारी

पानीपत युद्ध के समय कुछ दिनों नवाब शुजाउद्दौला दिल्ली में टिके। उन्हीं दिनों में मुहर्रम पड़ा। अहमद शाह को शुजाउद्दौला से बहुत प्यार था। मुहर्रम के समय काले कपड़े पहने हुए और काले पहनावे वाले समूह के साथ जो नंगे सर व नंगे पाँव थे मातम करते हुए अहमद शाह के आसन के सामने से निकले। उन लोगों के कन्धों पर अलम थे सीना पीटते जाते थे और खुल्लम-खुल्ला नौहे के बोल ज़बान से निकालते थे, हाँ तबर्रा के बोल होंटों में कहते थे। दुर्रानियों का इरादा हुआ कि उन पर हमला करें, मगर बादशाह (अहमद शाह) ने समझा दिया। (*तारीख़े अवध* उर्दू (अवध का इतिहास) द्वारा हकीम नज्मुल ग़नी)

**नवाब आसफ़ुद्दौला** वज़ीर (अवध) ताज़ियादारी धूमधाम से करते थे। ताज़िया देखते तो अंदर से नंगे पाँव निकलते। कम से कम पाँच रुपये और ज़्यादा से ज़्यादा हज़ार रुपये नज़र (चढ़ावा) करते। हर साल मुहर्रम में एक लाख रुपये का ख़र्च था। लखनऊ में बड़ा शानदान इमामबाड़ा बनवाया जो आसफ़ी इमामबाड़े के नाम से मशहूर है और संसार में इसके हाल से बड़ा कोई हाल नहीं है। दुनिया के बड़े-बड़े पर्यटक दूर-दूर से इसे देखने आते हैं। इसमें आसफ़ुद्दौला के काल में बहुत धूम से मजलिसें होती थीं और हज़ारों ग़रीब खाने, तबर्रुक (प्रसाद) और नज़र नियाज़ से लाभ पाते थे। रौज़ा ख़ॉन मुल्ला मुहम्मद मजलिसें पढ़ते थे। अब भी मुहर्रम के अशरे (दस दिन) और दूसरे दिनों में मजलिसें होती हैं। बादशाह ने तीन साल तक स्वयं इसमें मजलिसों में भाग लिया। (देखिये, 'तिलिस्मे हिन्द' व 'तारीख़े अवध') हज़रत अब्बास की दरगाह के निर्माण की नींव इसी काल से शुरु हुई। आसफ़ुद्दौला के काल में सैकड़ों ताज़िये सोने चाँदी के बनाकर आसफ़ी इमामबाड़े में रखे जाते और साल में लगभग पाँच लाख रुपये इमामबाड़े की साज सज्जा में ख़र्च होते थे। 1211[हि०] में डॉ० ब्लीन के द्वारा दो ताज़िये बत्ती के साथ झाड़ फ़ानूस के साथ मंगवाने का हुक्म दिया गया और शर्त यह थी कि एक हरे रंग का ताज़िया हो और एक लाल रंग का। इसका मूल्य एक लाख तय हुआ था।

## शाही (काल) के बड़े-बड़े हिन्दू महाशयों और इमाम हुसैन की अज़ा (शोक)

**महाराजा मेवा राम** इफ़्तिख़ारुद्दौला उपाधि थी, आसफ़ी काल में दीवान (प्रमुख उच्च सचिव) थे, दो तीन लाख रुपये वर्षिक मुहर्रम के अशरे में और पावन इमामों की वफ़ात (देहान्त) आदि के दिनों में ख़र्च करते थे।

(तारीख़े अवध, हिस्सा-4) रिसाला सवानेह उमरी संकलन मिर्ज़ा 'होश' में लिखा है:-

महाराजा मेवाराम मुहर्रम के अशरे की ताज़ियादारी में हज़ारों रुपया ख़र्च करते थे, मुहर्रम के अशरे की मजलिसों के तीन सौ ज़ाकिर (मजलिस पढ़ने वाले) तय होते और शाम होते मजलिस शुरु होती और रात के अन्त तक समाप्त होती। बहुत से ज़ाकिरों को बड़ी-बड़ी धनराशियाँ प्रदान होती थीं।

**राजा झाउलाल** यह आसफ़ुद्दौला के काल में विभिन्न पदों पर थे। उनका इमामबाड़ा ठाकुरगंज लखनऊ में अब भी है जिसमें किसी समय में शिया शाही काल में बड़े धूमधाम से राजा झाउलाल मजलिस किया करते थे जिसमें नवाब इम्दाद हुसैन ख़ाँ साहब, वज़ीर अवध हर महीने की तेरहवीं को शाम के समय सम्मिलित होते थे।

## नवाब सआ़दत अली ख़ाँ

नवाब की आदत थी कि छुट्टी के दिन भी नियमित काग़ज़ देखते थे यहाँ तक कि मुहर्रम के अशरे में भी यही हाल रहता था। बस आशूर के दिन काम न करते थे और कोठी फ़रहत बख़्श में जाकर बे-फ़र्श ज़मीन पर दो ज़ानू बैठते। यहाँ से पक्का पुल दिखता था। नवाब आसफ़ुद्दौला के इमामबाड़े में ताज़ियादारी होती थी। उस वक़्त में वहाँ की ज़रीह पुल पर होकर करबला में जाती थी, उधर देख-देख कर रोया करते थे। (देखिये, 'तारीख़े असलाफ़' संकलनः मौलाना अज़ीज़ुल्लाह शाह साहब 'विलायत', सज्जादा नशीन, न्योतिनी)

दरगाह हज़रत अब्बास जों बहुत लोकप्रिय है, में हाल इसी काल में नवाब साहब के आदेश से बढ़ा।

## हुसैन की अज़ा और उससे जुड़ी बातों में सुन्नियों का हिस्सा

मुन्शी रौनक़ अली, मज़हब से सुन्नी, नवाब सआ़दत अली के मीर मुन्शी (प्रमुख सचिव) थे। एक बार मुहर्रम में पालकी पर सवार जाते थे, एक रंडी अपने दरवाज़े पर नियाज़ का खाना बांटती थी, उनकी सवारी देखकर आवाज़ दी कि मुन्शी साहब हिस्सा लेते जाइए। रौनक़ अली ख़ाँ ने सवारी रुकवाई और अपना दामन पालकी पर बिछा दिया और हिस्सा लिया।

## नवाब ग़ाज़ीउद्दीन हैदर

लखनऊ में सिकन्दर बाग़ से मिली एक शानदार इमारत हज़रत अली[अ०] के रौज़े की नक़ल का निर्माण इस बादशाह के हुक्म से हुआ जो शाहनजफ़ के नाम से मशहूर है। शाहनजफ़ में मजलिसों के लिए बादशाह ने बहुत बड़ी धनराशि ईस्ट इण्डिया कम्पनी में जमा कर दी जिससे अब तक मजलिसें आदि होती हैं। लखनऊ में कई जगह क़दम रसूल (रसूल मुहम्मद साहब का पावन चिन्ह) है लेकिन शाहनजफ़ के पास जो इमारत ऊँचाई पर है वह ग़ाज़ीउद्दीन हैदर ने बनवाई थी। इसमें एक पत्थर का टुकड़ा है जो अरब से एक हाजी लाया था उस पर आप[स०] के पद की छाप (पद्चिन्ह) थी। ग़दर (1857[ई०] के संग्राम) में वह पत्थर गुम हो गया। ग़ाज़ीउद्दीन ने अपने बेटे नसीरुद्दीन की मन्नत बढ़ाने के लिए इंग्लैण्ड से एक बहूमूल्य बिल्लूर (Quartz) की ज़रीह तैयार कराके मंगवायी थी।

## नसीरुद्दीन हैदर

इस बादशाह की मज़हबी अति और अज़ादारी का हाल 'अरबईन' (चेहल्लुम) तक अज़ादारी स्थापित करने वाले लेख में लिखा गया। 'तारीख़े अवध' में है कि बादशाह हज़ार जान दिल से इमामों[अ०] के प्यार में मगन थे और राजसत्ता और धन के होते हुए ईमान के जोश में अज़ादारी की हज़ारों रस्में करते थे। बादशाह चेहल्लुम तक ज़मीन के फ़र्श पर सोते थे। बादशाह बेगम और क़ुदसिया महल सोने और चाँदी की तौक़ और ज़ंजीरें बादशाह की गर्दन और कमर और पाँव में पहनाती थीं। मुहर्रम के दिनों में बादशाह सारी रातें जागकर काटते थे। लखनऊ मुहल्ले पार में एक शानदार करबला बनवायी और उसी में दफ़न है। (*'शबाबे लखनऊ'* और *'तारीख़े अवध'*)

## मु'तमुद्दौला आग़ामीर, वज़ीर (प्रधानमंत्री) ग़ाज़ियुद्दीन बादशाह

आग़ामीर ने अपने वज़ीर होने के काल में मुहर्रम को बहुत विकास दिया। बादशाह से कहकर काले कपड़े का हुक्म लागू कराया। उन्होंने एक करबला बनवायी जिसमें मुहल्ला नरही, लखनऊ में और फ़ेरी मेसन लॉज

है। उनके बनवाये हुए इमामबाड़े में अब जुबिली कालेज, लखनऊ है।

### मुहम्मद अली शाह

नसीरुद्दीन शाह के जीवन का बड़ा कारनामा हुसैनाबाद इमामबाड़े का बनवाना है जिसमें बादशाह की क़ब्र है और मुहर्रम के अशरे में और दूसरे दिनों में बहुत मजलिसें होती हैं। बादशाह ने इसके ख़र्च के लिए कई लाख रुपया ब्रिटेन सरकार को दिया जिसके ब्याज से अब तक धार्मिक काम, ख़ैरात और मजलिसें होती हैं। मुहर्रम में ऐसी उम्दा रौशनी होती है कि दूर-दूर से लोग देखने आते हैं।

### अमजद अली शाह

अमजद अली शाह बहुत ज़्यादा मज़हबी बादशाह थे। उनके काल में ताज़ियादारी को बहुत बढ़ावा मिला। खुद हज़रतगंज में शानदार इमामबाड़ा बनवाया जिसमें धूमधाम से अज़ादारी होती है।

### वाजिद अली शाह

मुहर्रम में बादशाह और दरबारी मातमी कपड़े पहनते थे। क़ैसरबाग़ में जो इमारत (सफ़ेद) बारादरी के नाम से मशहूर है, उसका नाम बैतुलबुका (रोने की जगह/शोकालय) था। मुहर्रम की शाही मजलिसें वाजिद अली शाह के काल में इसी में होती थीं।

वाजिद अली शाह ने हज़ारों 'सलाम', 'नौहे', 'मरसिये' कहे (रचना की) और अज़ादारी और ताज़ियादारी में इतनी लगन थी कि अकसर अज़ा के दिनों में अपना कला-कौशल्य दिखने के लिए मातमी बाजों में से ताशा इतना उमदा बजाते थे कि बड़े-बड़े कलाकार अचम्भे में चकरा जाते थे। जब मटिया बुरुज जाने लगे तो अपना ताज और तलवार लखनऊ में दरगाह हज़रत अब्बास में चढ़ा दिया। मटिया बुरुज में एक इमामबाड़ा बनवाया जिसमें उनकी क़ब्र है। मिर्ज़ा 'दबीर' और मीर 'अनीस' और दूसरे (ललित) कला के कुशल कमाल वालों के मान को पहचानते थे। इन लोगों ने अक्सर मजलिसें उनके अज़ाख़ाने में पढ़ीः

वह प्याला टूट गया और साक़ी (मद बांटने वाला) न रहा।

## चेहल्लुम तक ताज़ियादारी और काले पहनावे का आरम्भ

### नसीरुद्दीन हैदर बादशाह, अवध नरेश, हुसैन[अ०] के अज़ादार के रूप में

यूँ तो खुदा जाने कब से और नहीं मालूम किस-किस धरती, बस्ती, उजाड़ और वनों में अलग-अलग जातियों ने माह मुहर्रम में हुसैन की अज़ा (शोक) की और इसका सिलसिला चेहल्लुम तक रहा। कुछ इतिहासकार लिखते हैं कि चेहल्लुम तक अज़ादारी का सिलसिला नियमित रूप से नवाब सआदत अली ख़ाँ, वज़ीर अवध के काल से किया गया लेकिन जहाँ तक पता चलता है इस क़ायदे के साथ चेहल्लुम तक ताज़ियादारी का चलन नसीरुद्दीन हैदर बादशाह अवध के काल से हुआ जैसा कि पुस्तिका 'सवानेह उमरी' द्वारा मिर्ज़ा मुहम्मद अब्बास साहब 'होश' प्रकाशित 1308[हि०] से साफ़ है। इसके समर्थन में हम अपने महाश्य जनाब सैय्यद असरार हुसैन ख़ाँ साहब की इजाज़त से उनके निबन्ध से कुछ लाइनें नीचे लिखते हैंः

नसीरुद्दीन हैदर ने अपने तख़्त (सिंहासन) पर बैठने से पहले मनौती (मन्नत) मानी थी कि अगर मुझे कभी राजसिंहासन मिलेगा तो मैं बजाए अशरे (मुहर्रम के पहले दस दिन) के चेहलुम (इमाम के चालीसवें) तक (अर्थात चालीस दिन आगे तक) अज़ादारी किया करूँगा। इसलिए इस वचन का कड़ाई से पालन करते रहे। राज के बाग़ों में जितने खुश्बू वाले फूल पैदा होते थे वे और उनके अलावा बाज़ारों से पाँच हज़ार रुपये के फूल मुहर्रम के अशरे तक मोल आते थे। उस ज़माने में खुश्बू वाले फूल बड़े-बड़े आदमियों को भी मुश्किल से मिलते थे। बादशाह का विश्वास इन कामों में इतना बढ़-चढ़ कर था कि मुहर्रम की पहली तारीख़ को सौ-पचास ताज़िये राजद्वार से तय जगह तक अपने सर पर रखकर पहुँचाते थे और हर बार के आने जाने में कई कोस ज़मीन पर नंगे पाँव (लोग) चले जाते थे और यह आना-जाना कंकरियों की ज़मीन पर नंगे पाँव होता था यहाँ तक कि तलवों में वह कंकरियाँ काँटों की तरह

खटकती थीं। चेहलुम तक ज़मीन के फ़र्श पर सोते थे। मुहर्रम के दिनों में सारी रातें जाग कर काटते थे। सुबह से शाम तक हर महल में अकसर स्वयं बादशाह मरसिया पढ़ते और नौहे पढ़ते फिरते थे। बस चालीस दिन बादशाह को रोते कटते थे। उन दिनों में फरिश्ते की मजाल न थी कि वह किसी दुनिया के काम की बात बादशाह के सामने कर सकता। कम कोई महीना ऐसा होता था कि आधा महीना इन कामों में नहीं बीतता था। हर तरह आधा साल रोने पीटने में अज़ादारी के साथ बीतता था। हज़रत बादशाह की नियति थी मुहर्रम में दावतें नहीं देते थे और भोग विलास ऐश की सभी चीज़ों को दिल दिये हुए थे, उन सबको छोड़ देते, नाच रंग बिल्कुल बंद हो जाता था। अंग्रेज़ी चाव की जो चीज़ें उन्हें जी से पसन्द थीं उन सब को छोड़ देते थे। सभी माल और राजकीय काम उस ज़माने में स्थगित हो जाते थे। मुहर्रम के अशरे से चेहलुम तक दिन रात रोना, ज़मीन पर सोना, आस्मानी (Indigo) रंग के या काले कपड़े, होंटों पर 'हाय-वाय', भूले से न मुस्कुराना, हज़ारों रुपये मरसिया पढ़ने वालों और रोज़ी-रोटी को तरसते ग़रीबों को देना, ख़ैरात करना, आदि ताज़ियादारी की उन्नति इस काल में हुई और चेहलुम में ताज़िये दफ़्न करना भी उसी काल से हुआ। बादशाह का ताज़िया जो ग़ाज़ीयुद्दीन हैदर के राजकाल में इंग्लैण्ड से बनकर आया था, हरे क्वाट्र्ज़ का ढला हुआ था और उस पर सुनहरा मीना किया हुआ था। बादशाह मातमी कपड़े (काले या आसमानी) पहने और सर पर मोर के परों का ताज रखे वाक़िया ख़्वान (मजलिस पढ़ने के एक प्रकार का ज़ाकिर जो 'वाक़िया' यानी करबला की घटनाओं को बयान करता है।) के सामने बैठते थे। पुस्तिका 'सवानेह उमरी' में इस तरह लिखा हैः "नसीरुद्दीन हैदर इमाम हुसैन की ताज़ियादारी और इमामों की मुहब्बत की विशेषता में (अपने) समय के एक और (अपने) काल में न्यारे थे, और चेहलुम तक ताज़ियादारी और काला पहनावा उन्हीं के शुरु किये हैं। सभी महल (रानियाँ) और दरबारी चेहलुम तक काले कपड़े में होते, और ऊँचे पदों का हरेक राजकर्मी काला या आसमानी कपड़ों में होता। यह नहीं सम्भव था कि चेहलुम के दिनों में कोई भी मातमी (सोग वाले) पहनावे के बिना वहाँ से गुज़र जाता। ताज़ियादारी का सामान बड़ी शान और गरिमा से किया जाता। बारह सौ सादात दस-दस रुपये महीने के तन्ख़्वाह पर नौकर होते। ताज़िया ख़ानों में नियुक्त सैकड़ों ज़ाकिर और मरसिया पढ़ने वाले मजलिसों में होते। मुहर्रम के अशरे बाद हलवे के थाल जो सादात में बाटे दस सेर (लगभग 1001 किलो) के होते। इसी तरह खीर के बहुत बड़े कटोरे और सोने चाँदी की तौक़ और ज़ंजीरें सैकड़ों सादात में बाँटे जाते थे। चेहल्लुम के दिनों में मजलिस, नौहा मातम के अलावा कोई सरकारी काम न होता। शहर की प्रजा में जैसे हिन्दु आदि में भी चेहलुम के दिनों कोई ख़ुशी का सामान नहीं हो सकता था।

## शाही काल के कुछ मशहूर ताज़िये

### मुम्ताज़ुद्दौला का ताज़िया

मुहम्मद अली शाह के राजकाल में नवाब नासिरुद्दौला असग़र अली ख़ाँ की बीवी यानी नवाब मुम्ताज़ुद्दौला की माँ ने बड़ी तामझाम से ताज़िया उठाया। यह महिला चेहलुम में हज़ारों रुपया ख़र्च करती थीं। सारा शहर जमा होता था। यह ताज़िया अब प्रिंस नवाब बाक़र मिर्ज़ा साहब, मुतवल्ली, हुसैनाबाद के मकान से चेहलुम को उठता है।

### रांगे वाली ज़रीह

यह ज़रीह पीर ख़ाँ की गढ़ी मुहल्ले से उठती थी। इसमें बड़े-बड़े (रईस/राजसी) लोग भाग लेते थे और शाही काल के बाद तक उठती रही।

### बख़शो का ताज़िया

मुहम्मद बख़शो काग़ज़ी वाजिद अली शाह के काल में था। यह पहले सुन्नी था फिर शिया हो गया। फूल बत्ती का काम करता था। वाजिद अली शाह ख़ुद इसके ताज़िये की ज़ियारत (दर्शन) को आते थे। शाही स्टाफ़ सिर्फ़ इसी ताज़ियों में जाता था।

बादशाह ने बख़शो की श्रद्धा से ख़ुश होकर पूछा कि क्या माँगते हो? उसने कहा कि कुछ नहीं सिर्फ़ शाही स्टाफ़ इस ताज़िये में भाग ले। इसलिए ऐसा आदेश लागू

हो गया। पहले यह ताज़िया सराय मा'ली ख़ाँ से उठता था। अब मुफ़्तीगंज से उठता है।

## मुसम्मात (नाम की) कबीरन का ताज़िया

शाही काल में यह ताज़िया हाता मिर्ज़ा अली ख़ाँ से बड़ी धूम-धाम से उठता था। सब औरतें भाग लेती थीं। रात में ताज़िया उठता था। कोई मर्द पास भी जाने न पाता था। यह ताज़िया शीदी सफ़दर हुसैन की माँ उठाती हैं और औरतें मातम करती हुई इसको मुहल्ला नवाज़गंज के नजफ़ में ले जाती हैं।

## ताबूत सकीनाः

वाजिद अली शाह के काल में ख़ाक-पाक (करबला की पवित्र मिट्टी) करबला मुअल्ला से एक बुज़ुर्ग सै० मेहदी हसन साहब लाये और दियानतुद्दौला की करबला में ज़रीह रखी गई। शाही आदेशों से राजकर्मी काले कपड़े पहन कर ज़रीह के स्वागत को गये। ताबूत सकीना नाम की वह ज़रीह कै़सरबाग़ बारादरी इमामबाड़ा "बैतुल बुका" (शोकालय) तक बड़ी व्यस्था के साथ लाई गई। यह 25 मई 1854ई० की घटना है। (*'तारीख़े अवध'*)

## शाही काल के मशहूर इमामबाड़े और करबलाएं

अवध के पिछले शासक और उनके राजयिक और वज़ीरों की दुखभरी याद के साथ ताज़ियादारी और अज़ादारी में उनकी लगन भी आज एक ऐतिहासिक शोक काव्य है। वह सब धरती में सो रहे मगर लखनऊ की ज़मीन पर उनके बनवाये सैकड़ों शानदार इमामबाड़े और करबलाएं आज भी हुसैन की याद के साथ-साथ उन लोगों के मज़हबी उत्साह का धुन्धला नक़्शा सामने कर रहे हैं। एक अंग्रेज़ इतिहासकार ने यहाँ इमामबाड़ों की बहुतात का कारण यह लिखा कि शहर की आबादी इतनी बढ़ गई थी कि नये मकान बनाने की इजाज़त नहीं मिलती थी, इसलिए ज़्यादा राजयिक करबला और इमामबाड़े के नाम से इजाज़त लेकर अपनी स्मारक के रूप में ये इमारतें बनवाते थे। हो सकता है यह कारण सही हो लेकिन असल में यह निर्माण धर्म श्रद्धा और नेक काम पर आधारित है। ये निर्माण उनके जीवन का बड़ा नैतिक नमूना दिखा रहे हैं। इनके आधार में मौत की याद भी यूँ छिपी रहती थी कि उनके बचाने वाले अपनी ही करबला में ही दफ़न होने की वसीयत कर जाते थे जिसका सबूत निम्न के बयान और इमारतों से मिलेगा। सुनसान में क़ब्र का अकेलापन का ध्यान जब सताता रहा तो करबलाओं की कोठरियों के बसने वालों का सहारा ढूंढा गया।

हर हाल से इन इमारतों की कोठरियों में आज भी कितने बेघर, ग़रीब और निर्धन पनाह लिए हुए हैं और ग़रीबी के मारे जीवन की कड़वी घड़ियाँ काट रहे हैं। दुख और सीख के असर से यह बात भी ख़ाली नहीं कि लखनऊ के सैकड़ों इमामबाड़े खोद डाले गये, बहुत से इमामबाड़े गिरवी या बिककर बनवाने वालों के वारिसों की लापरवाही या संसार माया की वजह से दूसरों के हाथ चले गये और दूसरे रूपों में इस तरह बदल गये कि आज उनका पहचानना मुश्किल है। कुछ इमामबाड़ों के कुछ निशान अभी बाक़ी हैं पर सुबह शाम में मिटने ही को हैं।

नीचे सिर्फ़ कुछ-कुछ करबला और इमामबाड़े के संक्षिप्त बयान पता लगा-लगा कर लिख दिये जाते हैं कि बेगुनाह बन्दियों की तरह उनके बयान के लिए ये पन्ने बन्दीगृह का काम दें।

मुन्शी फ़ज़्ल हुसैन की करबला और सौदागर बाक़र का इमामबाड़ा शाही काल के बाद बने हैं इसलिए ऐसे इमामबाड़ों का बयान नहीं किया गया।

बाहर के आने वाले पर्यटकों (Tourist) की क्या बात, लखनऊ के रहने वाले खुद इमामबाड़ों को नहीं जानते हैं। हुसैन पर रोने वाले हुसैन से सम्बन्धित होने वाले इमामबाड़े और करबलाओं का दृश्य ज़रा लखनऊ में आकर देखें। लखनऊ की सैकड़ों मातती अन्जुमनें हुसैन की मातमदारी में लगी हैं वे पहले से इमाम हुसैन की अज़ा की यही सेवा करते आये हैं। वहीं दुनिया के और किसी हिस्से में ऐसी अन्जुमनें हों जो इन स्मारकों को बाक़ी रखने की ओर ध्यान देती जिनके बेबस और मरहूम स्थापकों को आज सूरा फ़ातिहा की ज़रूरत है और उनके बनवाये हुए इमामबाड़े और करबलाएं दुख और खेद के घर बनते जा रहे हैं। कुछ करबलाओं की टूटी-फूटी हालत पर रात में जंगल के जानवर आकर रो जाते हैं और टूटी हुई करबला की ज़बान से यह नौहा सुनते हैं:-

संसार में अब कोई एक सहानुभूति करने वाला नहीं है इसलिए अपने दर्द व्यथा को दीवार से कहता हूँ।

## दरगाह हज़रत अब्बास

लखनऊ में यह दरगाह मुहल्ला रुस्तम नगर में है और बहुत मानी हुई (मक़बूल) ज़ियारत की जगह (दर्शन स्थल) है। इसके बनने के इतिहास को कम ही लोग जानते होंगे। इतिहास से यह मालूम हुआ है कि मिर्ज़ा फ़क़ीर नामी, निवासी रुस्तम नगर ने असफ़ुद्दौला के काल में यह सपना देखा कि एक बड़े व्यक्त उन से कह रहे हैं कि शहर के बाहर सरफ़राज़गंज और मूसाबाग़ में अलम ज़मीन में दफ़न है, जाकर निकाल लाओ। इसलिए कुछ दोस्तों के साथ जाकर मिर्ज़ा ने ज़मीन कई जगह से खोदी और अलम निकला। तब मिर्ज़ा से लोगों ने कहा कि बेशक यह ख़ॅाब सच्चा है और यह अलम हज़रत अब्बास का है। नवाब असफ़ुद्दौला अपनी किसी सेविका से नाख़ुश हुए और उसकी नाक कटवाने का हुक्म दिया। उस सेविका ने नाख़ुशी दूर होने की इसी अलम के सामने दुआ माँगी और बादशाह की नाख़ुशी दूर हो गई। इस तरह बादशाह को उसके द्वारा इस अलम की ख़बर हुई। बादशाह के एक भरोसे वाले मिर्ज़ा के घर अलम देखने आये। बादशाह ने उन से सब हाल सुनकर जहाँ अलम रखा था एक पक्की ईंटों का गुम्बद (कलस) बनवा दिया फिर नवाब सआदत अली ख़ाँ ने मन्नत (मनौती) मानी कि अगर आसफ़ुद्दौला के बाद उनको लखनऊ का राज मिल जाए तो वह सोने का गुम्बद बनवा देंगे। जब नवाब सआदत अली ख़ाँ को गद्दी मिली तो ईंटों के गुम्बद को सोने का करा दिया और विशाल दरगाह बनवा दी और उसके दो हिस्से बनवाये एक मर्दों की दरगाह और दूसरी ज़नानी (औरतों की) दरगाह। उन के मरने पर ग़ाज़ीयुद्दीन बादशाह हुए और उन्होंने ऊँचा नक़्क़ार ख़ाना (ढोल की जगह) बनवाया और नौबत और घड़ियाल रखा गया। नसीरुद्दीन हैदर शाह अवध के काल में नवाब मलका ज़मानिया ने इस दरगाह की रसोई बनवायी। उस समयसे जो नया बादशाह होता था वह दरगाह में सलाम को आता था। शहर में दूल्हा-दुल्हन यहाँ सलाम के लिए उसी समय से आने लगे। ग़दर (1857 का संग्राम) में और सामान के साथ अलम भी लुट गया। मिर्ज़ा फ़क़ीर की क़ब्र मर्दानी दरगाह में गुम्बद के पच्छिम की ओर है।

जब वाजिद अली शाह अवध का राज छोड़कर कलकत्ता (अब नाम कोलकाता हो गया) जाने लगे तो अपना ताज और तलवार इस दरगाह में चढ़ा गये थे। ग़दर के दिनों में ये चीज़ें भी मिट गयीं और अलम भी। ग़दर के बाद नवाब अमीरुद्दौला मरहूम सुपुत्र नवाब रुक्नुद्दौला सुपुत्र नवाब सआदत अली ख़ाँ ने एक हौज़ 1295 हि० में इस दरगाह में बनवाया जो अब तक है। इसकी मरम्मत कई बार महाराजा महमूदाबाद ने करा दी।

## करबला तालकटोरा

यह करबला सआदत अली ख़ाँ के राजकाल में पचास पक्के बीघा ज़मीन लेकर हाजी मसीता की देखरेख में बनी। इमारत के लिए जो मिट्टी खोदी गयी वह ताल जैसी हो गयी इसलिए इसका नाम तालकटोरा हुआ। इसमें शियों के ताज़िये दफ़न होते हैं। 1232 हि० में यह बनी। इसका दूसरा नाम करबला मीर ख़ुदा बख़्श ख़ाँ है जिन्होंने इसको बनवाया था। इसी के पास एक गुंबद है जिसको क़त्लगाह (हत्या-स्थली) या ख़ैमागाह (तम्बू स्थली) कहते हैं।

## करबला अज़ीमुल्लाह ख़ाँ

मुहम्मद अली शाह के राजकाल में इमाम रज़ा के रौज़े की नक़ल (समरूप) इस करबला को अज़ीमुल्लाह ख़ाँ, जो मुहम्मद अली शाह के साथी थे, ने बनवाया। यह तालकटोरे की करबला के पास है। अज़ीमुल्लाह ख़ाँ इसी में दफ़न हैं।

## करबला हाजी मसीता

हाजी मसीता सआदत अली ख़ाँ के राजकाल में दरोग़ा, तामीरात (निर्माण प्रभारी) थे, उन्होंने यह करबला तालकटोरे के पास बनवा दी जो अब अच्छी हालत में नहीं है।

## करबला अमीनुद्दौला

यह तालकटोरे की करबला से मिले मुहल्ला सिपाह के पास है। इसको अमीनुद्दौला इम्दाद हुसैन ख़ाँ, वज़ीर (प्रधानमंत्री), अमजद अली शाह ने बनवायी।

इसकी नींव सुल्तानुल उलमा ने रखी। 1266हि॰ में इसका निर्माण हुआ। यह हज़रत अब्बास के रौज़े की नक़ल है। वाजिद अली शाह आशूरा और चेहल्लुम को यहाँ जाते थे।

## करबला हैदरी

इसक करबला को मुहम्मद अली शाह के दरोग़ा आशिक़ अली ने बनवाया था। नवाब मलका जहाँ ने इस करबला को उनसे ले लिया। ये बड़े हज़रत की करबला कही जाती है और ऐशबाग़ में है।

## करबला नवाब मल्का जहाँ

करबला हैदरी के पास मल्का जहाँ ने हज़रत अब्बास के रौज़े की नक़ल बनवायी। ख़त्ते सुलुस (त्रिकोणीय लिपि-अरबी की एक लिपि स्टाइल) के कत्बे (लेख) उत्तम नमूने के हैं।

## जन्नतुल बक़ी उर्फ़ फ़ात्मैन

यह इमारत आसिफ़ी काल में नवाब सआदत अली ख़ाँ के राजकाल में बनी। यह दरगाह हज़रत अब्बास के पास रुस्तम नगर में है।

## जन्नतुल बक़ी'

ताल कटोरे की करबला जाते हुए गुम्बद जैसी इमारत बायें हाथ पर पड़ती है इसको ग़ल्ती से लोग हज़रत हुर का रौज़ा या मुस्लिम के यतीमों (अनाथों) का रौज़ा कहते हैं। नसीरुद्दीन हैदर के काल में नत्थू ईंट ठेकेदार ने 1833ई॰ में यह इमारत बनवायी। यह हज़रत सैयदा के रौज़े की नक़ल है।

## करबला रफ़ीक़ुद्दौला

यह काकोरी जाते हुए सड़क के पास अब्बास बाग़ में है। मुहम्मद अली शाह के काल में उनके साथी मीर इमाम अली ख़ाँ ने इसको बनवाया।

## करबला मुसाहिबुद्दौला

वाजिद अली शाह के काल में मुसाहिबुद्दौला ने इसको बनवाया। यह मिस्री की बग़या के पास है।

## करबला दियानतुद्दौला

वाजिद अली शाह के राजकाल में दियानतुद्दौला ख़ोंजासरा (किन्नर जो महल के सेवक और परहरी होते थे) ने मुहल्ला सआदत गंज में बनवाया।

## इमामबाड़ा मीर अली सोज़ ख़्वान

इस इमामबाड़े का पता नहीं। 'हयाते दबीर' के पेज 62 पर केवल इतना पता चलता है कि इसमें किसी मजलिस में मिर्ज़ा 'दबीर' सम्मिलित थे।

## इमामबाड़ा हैदरी वैश्या

यह इमामबाड़ा महमूद नगर में है जिसको वाजिद अली शाह के राजकाल में हैदरी ने बनवाया।

## इमामबाड़ा इकरामुल्लाह ख़ाँ

आसफ़ुद्दौला के काल में इकरामुल्लाह ख़ाँ ने इसे बनवाया। अब यह गिरी हालत में पुराने नक्ख़ास में है।

## इमामबाड़ा तजम्मुल हुसैन ख़ाँ

यह मुहल्ला कटरा अबुतुराब में है। तजम्मुल हुसैन ख़ाँ इसी में दफ़न हैं।

## इमामबाड़ा दाराब अली ख़ाँ

यह दाराब अली ख़ाँ ख़ोंजासरा ने मुहल्ला मोलवीगंज में इसे बनवाया था। इससे जुड़ा एक वक़्फ़ भी है।

## इमामबाड़ा बशीरुद्दौला

अब इसका कुछ पता नहीं है।

## इमामबाड़ा अनीसुद्दौला

छोटे ख़ाँ डहाढ़ी ने जिसका वतन दिल्ली था, यह इमामबाड़ा बनवाया था। अब इसमें सदर तहसील है।

## इमामबाड़ा नौरोज़ अली

यह इमामबाड़ा दरगाह हज़रत अब्बास के पास रुस्तम नगर में आग़ा मिर्ज़ा नसीरुद्दीन बादशाह के दूध-शरीक भाई ने बनवाया। अब यह खुद गया है।

## दरगाह दवाज़दह (बारह) इमाम

इस इमारत को ग़ाजियुद्दीन हैदर शाह की रानी बादशाह बेगम ने बनवाया था जिसमें बारह कमरे थे। यह इमारत खुद गयी।

## इमामबाड़ा मिर्ज़ा अबुतालिब ख़ाँ

यह सबसे पहला इमामबाड़ा है जो लखनऊ में बना। यह इमामबाड़ा नवाब शुजाउद्दौला के काल में बना। यह मुहल्ला शुतरख़ाना और आइनाबीबी बाग़ में स्थित है जो दफ़्तर नहर के पास है। यह तहसीनगंज के निवासी नवाब हुज़ूर जानी के क़ब्ज़े में है।

### इमामबाड़ा अतीकुल्लाह

यह इमामबाड़ा मुहल्ला नबहरा में था। अब नहीं रहा।

### इमामबाड़ा नवाब माशूक़ महल

शिवपुरी मुहल्ले में था, मस्जिद अभी बाक़ी है, इमामबाड़ा बाक़ी नहीं है।

### इमामबाड़ा मोनिस

मिर्ज़ा अली अकबर मोनिस ईरानी ने इमामबाड़ा बनवाया जिसका पता नहीं। (अक़्दे सुरैया पृ० 49)

### इमामबाड़ा कौड़ी वाला

मीर ज़ैनुल आब्दीन कौड़ी वाले बादशाह औरंगज़ेब के वज़ीर के ख़ानदान के थे। सराय म'आली ख़ाँ के कालीचरण स्कूल के कैम्पस में इन्हीं का इमामबाड़ा, कुँआ और मस्जिद है। यह अलमास अली ख़ाँ के यहाँ नौकर थे। यह इमारत आसफ़ी काल की है।

### इमामबाड़ा अलमास अली ख़ाँ

अलमास अली ख़ाँ ख़ोजासरा चकलादार थे। इनका इमामबाड़ा आसफ़ी काल का है और इमामबाड़ा आसफ़ी से मिलता-जुलता है। यह इमामबाड़ा टूटी-फूटी हालत में अब तक सरा म'आली ख़ाँ में बाक़ी है।

### इमामबाड़ा मल्का ज़मानी

नसीरुददीन हैदर के काल में मल्का ज़मानी बेगम बादशाह ने टीला पीर जलील के पास बनवाया था जो अभी बाक़ी है मल्का ज़मानी इसी में दफ़न है।

### इमाम बाड़ा केवाँ जाह

करबला तालकटोरा के पास है। केवाँ जाह मलका ज़मानी के पहले पति के बेटे थे। इस इमामबाड़े में केवाँ जाह की क़ब्र है।

### इमामबाड़ा क़ुद्सिया महल, करबला नसीरुद्दीन हैदर

शिया कालेज के पास डालीगंज स्टेशन के सामने है। इसमें कुदसिया बेगम, पत्नी नसीरुद्दीन हैदर और खुद नसीरुद्दीन हैदर बादशाह दफ़न हैं, नसीरुद्दीन के काल की इमारत है।

### करबला मल्का आफ़ाक़

मल्का आफ़ाक़ मुहम्मद अली शाह की बियाहता बीवी थीं। इसे डालीगंज में मल्का आफ़ाक़ ने हाजी मुहम्मद अली के माध्यम से तैयार कराया था। इसका नाम अस्करियैन भी है।

### क़दम रसूल, सिकंदर बाग़

शाहनजफ़ के पास ग़ाज़ियुद्दीन बादशाह ने बनवाया था। इसमें एक पत्थर का टुकड़ा रखा था जो अरब से एक हाजी लाये थे। पत्थर पर रसूल मक़बूल के पैर का निशान था। इमारत बाक़ी है, पत्थर ग़दर में मिट गया।

### क़दम रसूल, रुस्तम नगर

यह इमारत बहुत पुरानी है। अब तक बाक़ी है। हो सकता है, आसफ़ी काल की इमारत हो या शेख़ों के ज़माने की हो। हज़रत अब्बास की दरगाह जाते हुए रास्ते में यह इमारत पड़ती है।

### इमामबाड़ा इमादुद्दौला

नवाब जाफ़र अली ख़ाँ नवाब सआदत अली ख़ाँ वज़ीर अवध के बेटे थे जो 1851ई० में मरे। उन्होंने हज़रत गंज में इमामबाड़ा बनवाया था और उसी में दफ़न हुए। इसको मक़बरा इमादुद्दौला भी कहते थे। दिसम्बर 1934ई० में खुद गया।

### इमामबाड़ा जर्रारुद्दौला

यह इमामबाड़ा शाही समय में था। हादी अली ख़ाँ बहादुर जर्रारुद्दौला अली नक़ी के सगे सम्बन्धी थे। अब इस इमामबाड़े का पता नहीं।

### इमामबाड़ा मिफ़्ताहुद्दौला

यह इमामबाड़ा खुद गया। यह उस जगह था जहाँ पर जहाँगीराबाद पैलेस हज़रतगंज के पास स्थित है। यह मिर्ज़ा मुहम्मद अली ख़ाँ वाजिद अली शाह के काल में कप्तान थे।

### इमामबाड़ा झाउलाल

राजा झाउलाल दीवान आसफ़ुद्दौला के काल में थे। ठाकुरगंज में उन्होंने यह इमामबाड़ा और इसके सामने एक मस्जिद बनवायी थी जो टूटी-फूटी हालत में है इसमें किसी समय शिया बैतुलमाल (कोषागार) था। इसकी छत गिर गयी है।

### रौज़ा काज़मैन

राय जगन्नाथ अग्रवाल जाति के, बिज़नेस मैन,

उपाधि शरफुद्दौला, गुलाम रज़ा ख़ाँ (मुसलमान होने के बाद यह नाम रखा) ने इसे बनवाया। यह अमजद अली शाह बादशाह के काल में बड़े पदों पर थे। यह मन्सूर नगर में है और रौज़ा काज़मैन की नक़ल है।

## करबला मुन्सिफ़ुद्दौला

सैय्यद बाक़र मुन्सिफ़ुद्दौला सुल्तानुल उलमा के बड़े बेटे ने जो अमजद अली शाह के काल में उच्च न्यायालय के प्रभारी थे, महदीगंज में करबला बनवायी। अज़्मतुद्दौला ने बहुत रुपया ख़र्च करके इसकी मरम्मत करायी। अब यह करबला अज़्मतुद्दौला के नाम से मशहूर है।

## इमामबाड़ा सिब्तैनाबाद

हज़रतगंज में जो अमजद अली शाह का इमामबाड़ा कहा जाता है। अमजद अली शाह इसी में दफ़न हैं।

## शाहनजफ़

सिकंदर बाग़ के पास ग़ाज़ीयुद्दीन हैदर बादशाह ने हज़रत अली[अ०] के रौजे नजफ़ की नक़्ल बनाया। ग़ाज़ियुद्दीन हैदर बादशाह और उनकी बेगम मुबारक महल इसमें दफ़न हैं। दूर-दूर से लोग इसके दर्शन को आते हैं।

## नजफ़, नवाज़गंज

अमजद अली शाह के राजकाल में यह बनी। अभी है। इस जगह बहुत से शिवालय भी हैं।

## काला इमामबाड़ा

मुहल्ला पीर बुख़ारा में है। अन्दर से रंगा हुआ है, इसलिए इसको काला इमामबाड़ा कहते हैं। इस इमामबाड़े को आसफ़ुद्दौला के सगे मामूँ सालारजंग के बेटे नवाब क़ासिम अली ख़ाँ ने बनवाया। असली काला इमाम बाड़ा नवाब मिर्ज़ा हसन रज़ा ख़ाँ सरफ़राज़ुद्दौला ने बनवाया था जो आसफ़ुद्दौला के वज़ीर थे। असली काला इमामबाड़ा खुद गया जो रूमी दरवाज़े के पास था जहाँ गुईन गार्डेन है।

## इमामबाड़ा आग़ा बाक़र

शुजाउद्दौला वज़ीर अवध के काल में आग़ा बाक़र ख़ाँ इस्फ़ेहानी पाँच हज़ार सवार के रिसालादार (ब्रिगेडियर) थे। जिस समय यह इमामबाड़ा बना है आग़ा अबूतालिब के अलावा कोई दूसरा इमामबाड़ा लखनऊ शहर में न था। यह पहले बहुत बड़ा इमामबाड़ा था अब खुद कर एक छोटा सा इमामबाड़ा रह गया है।

## इमामबाड़ा मलका जहाँ

शियों की जामा मस्जिद के पास अधूरा इमामबाड़ा है। मल्का जहाँ मुहम्मद अली शाह की दूसरी बीवी थीं। इमामबाड़ा बनने न पाया था कि मुहम्मद अली शाह का देहान्त हो गया। अब सिर्फ़ खम्बे बाक़ी हैं।

## इमामबाड़ा हुसैनाबाद

यह मुहम्मद अली शाह बादशाह ने बनवाया। पहले यह जगह जहाँ इमामबाड़ा बना जमनिया बाग़ कही जाती थी। बीस लाख में यह इमामबाड़ा बना है। इससे जुड़ा बहुत बड़ा वक़्फ़ है और मुहम्मद अली शाह इसमें दफ़न हैं।

## इमामबाड़ा आसफ़ी

नवाब आसिफ़ुद्दौला बहादुर ने अकाल के समय बनवाया। किफ़ायतुल्लाह आर्किटैक्ट दिल्ली ने इसका नक़्शा बनाया था। पचास लाख से एक करोड़ तक इसके बनवाने का अनुमान है। दस साल में यह बना है।

## इमामबाड़ा तहसीन अली ख़ाँ

नवाब नाज़िर मुहम्मद तहसीन अली ख़ाँ, नवाब शुजाउद्दौला के पैसे से ख़रीदे गुलाम (दास) था, उसका यह इमामबाड़ा चौक में तहसीन अली ख़ाँ की मस्जिद के पास बना है। इसमें तहसीन अली ख़ाँ दफ़न हैं।

## इमामबाड़ा सिकन्दर शिकोह

शहज़ादा सिकन्दर शिकोह तैमूरी शहज़ादा मिर्ज़ा मुहम्मद अकबर शाह दिल्ली के सगे भाई थे, उन्होंने बाग़ पड़ायन के पास ज़मीन ख़रीद कर यह इमामबाड़ा बनवाया। इसमें अब सुन्नियों का दारुलयतामा (अनाथालय) है। यह नवाब सआदत अली ख़ाँ के काल में जनरल मैक ल्यॉड इंजीनियर के प्रबन्धन में बना।

## इमामबाड़ा धनिया महरी

यह कहारी नसीरुद्दीन हैदर के काल में थी। इसकी उपाधि (ख़िताब) अफ़ज़लुन्निसा (महिलाओं में सर्वश्रेष्ठ) था। आलम नगर में इसकी मस्जिद के पास ही इमामबाड़ा रहा होगा। अब बाक़ी नहीं है।

### इमामबाड़ा जाफ़री बेगम

यह नवाब मल्का जहाँ के यहाँ दरोग़ा (प्रबन्धक) थीं। नवाज़गंज में उन्होंने करबला बनवायी थी, अब बाक़ी नहीं।

### इमामबाड़ा नवाब अख़्तर महल

तहसीनगंज में यह इमामबाड़ा वाजिद अली शाह के वज़ीर (प्रधानमंत्री) अपनी बेटी अख़्तर महल के लिए बनवा रहे थे इतने में ग़दर हो गया और इमामबाड़ा अधूरा रहा।

### इमामबाड़ा बख़्शो

बख़्शो एक काग़ज़ी था जो सराय म'आली ख़ाँ में वाजिद अली शाह के राजकाल में रहता था। सुन्नी से शिया हो गया था। काग़ज़ के फूल बूटे बनाता था। उसने मस्जिद और इमामबाड़ा बनवाया था। इमामबाड़े के कुछ निशान सराय म'आली ख़ाँ में अब तक बाक़ी है। मस्जिद बिल्कुल अच्छी हालत में है। 22 सफ़र को हर साल उसके नाम से ताज़िया अब तक मुहल्ला मुफ़्तीगंज से उठता है।

### इमामबाड़ा बसंत अली ख़ाँ

इमामबाड़ा मुज़फ़्फ़रुद्दौला, इमामबाड़ा दियानतुद्दौला, इमामबाड़ा अहसनुद्दौला शाही काल के स्मारक और अनगिनत इमामबाड़ों की तरह थे वह इस तरह खुद कर बराबर हो गये कि सिर्फ़ पुराने इतिहास में नाम रह गया।

### इमामबाड़ा ग़ुलाम हुसैन

चौलखी क़ैसरबाग़ के पास यह इमामबाड़ा था जिसका अब कुछ पता नहीं।

### इमामबाड़ा सैय्यद मुहम्मद बनारसी

मुफ़्तीगंज में यह इमामबाड़ा अब भी बाक़ी है। वाजिद अली शाह के काल की इमारत है। इसमें हर साल मीर 'अनीस' मरहूम मजलिस पढ़ते थे।

### इमामबाड़ा गम्मो ख़ाँ

हाता मिर्ज़ा अली ख़ाँ में था। कुछ साल हुए खोद डाला गया।

### इमामबाड़ा लाडो ख़ानम

यह इमामबाड़ा सआदतगंज में है।

### इमामबाड़ा मीर अब्बास खॉस वाले

तहसीनगंज में यह इमामबाड़ा हामिद अली ख़ाँ बैरिस्टर के मकान के पीछे था, अब खोद डाला गया है।

### करबला मु'तमुद्दौला

हज़रतगंज और लालबाग़ के पास है। इसमें स्काच फ्री मैसन लॉज है। यह करबला नसीरुद्दीन हैदर के शासनकाल में बनी थी और आग़ामीर ने इसे बनवाया था।

### इमामबाड़ा आग़ामीर

जो इमारत अब बदले हुए रूप में जुबिली स्कूल है वह पहले आग़ामीर का इमामबाड़ा था। अब इसके पास की इमारत बाक़ी नहीं।

### इमामबाड़ा मीरन साहब*

मीरन साहब वाजिद अली शाह के शासनकाल में थे। आग़ा बाक़र के इमामबाड़े को जाते हुए इनका बनवाया हुआ इमामबाड़ा पड़ता है।

### इमामबाड़ा सैय्यद तक़ी साहब

चौक में तहसीन की मस्जिद के पीछे यह इमामबाड़ा है जो वाजिद अली शाह के राजकाल में सैय्यद मुहम्मद तक़ी साहब क़िब्ला मुजतहिद[अ०म०] की यादगार अब तक बाक़ी है।

---

* यहाँ यह इमामबाड़ा मीरन साहब नहीं है। यह इमामबाड़ा (जुब्दतुल उलमा) सैय्यद अली नक़ी की बात है। सैय्यद अली नक़ी (सैय्यदुल उलमा) सै० हुसैन (उर्फ़ मीरन साहब) के बेटे थे और अमजद अली शाह के राजकाल में ज़कात के आवंटन के प्रभारी थे। उनकी मस्जिद और कोठी भी इमामबाड़े के पास है।

मुख्य समाचार

# शाम में हलाकतों की तादाद पाँच हज़ार से ज़्यादा

अक़वामे मुत्तहेदा का कहना है कि शाम में नौ माह से ज़ायद अरसे से जारी हुकूमत मुख़ालिफ़ तहरीक के दौरान हलाक होने वालों की तादाद पाँच हज़ार से तजावुज़ कर गई है। पीर को सलामती काउंसिल के इज्लास से ख़िताब करते हुए हुक़ूक़े इंसानी के लिए अक़वामे मुत्तहेदा की कमिश्नर नवी प्ले का कहना था कि इस अरसे के दौरान शामी सेक्योरिटी फ़ोरसेज़ ने चौदह हज़ार अफ़राद को गिरफ़्तार किया जबकि मार्च से अब तक बार हज़ार से ज़ायद मुल्क छोड़ने पर मजबूर हुए हैं।

नवी प्ले का कहना है कि शाम की सूरतेहाल नाक़ाबिले बर्दाश्त है और बैनुलअक़वामी बिरादरी की जानिब से शाम के ख़िलाफ़ इक़दामात से गुरेज़ शामी हुक्काम को निडर बना रहा है। अक़वामे मुत्तहेदा के कमिश्नर का कहना था कि जिन पाँच हज़ार हलाकतों की बात वह कर रहे हैं उनमें शामी सेक्योरिटी फ़ोरसेज़ के अरकान की तादाद शामिल नहीं। शामी हुकूमत का कहना है कि अब तक हुकूमत मुख़ालिफ़ तहरीक के दौरान एक हज़ार पुलिस अहलकार और फ़ौजी मारे जा चुके हैं। शाम ने बैनुलअक़वामी मीडिया पर शाम में दाख़िल होने पर पाबंदी लगा रखी है जिसकी वजह से हलाकतों की तादाद की तस्दीक़ नहीं की जा सकती।

शाम में मार्च से सदर बशारुल असद की हुकूमत के ख़िलाफ़ मुज़ाहेरों का सिलसिला जारी है और इस दौरान शामी सेक्योरिटी फ़ोरसेज़ पर मुज़ाहिरीन पर बहीमाना तशद्दुद के इल्ज़ामात लगे हैं। शाम की हुकूमत को फ़सादात को रोकने और तशद्दुद ख़त्म करने के लिए आलमी सतह पर शदीद दबाव का सामना है। अरब लीग ने भी शाम की हुकूमत के ख़िलाफ़ इक़्तेसादी पाबन्दियाँ आएद की हैं और मज़ीद पाबन्दियों का इम्कान है।

शाम के सदर बशारुलअसद ने कहा कि उन्हें मुल्क में होने वाले हंगामों में हलाकतों पर अफ़सोस है लेकिन उन्हें शरपसंदों के ख़िलाफ़ क्रीक डाउन करने पर कोई नेदामत नहीं है।

# इस्राईल में मक़बूज़ा फ़िलिस्तीन की तमाम मस्जिदों में अज़ान पर पाबंदी

इस्राईली पार्लियामेण्ट ''केनेसेट'' में एक नए क़ानून के मुसव्वदे पर बहस जारी है। ज़ेरे बहस मुस्व्वद-ए-क़ानून में मक़बूज़ा फ़िलिस्तीन के सन 1948ई० की जंग में मक़बूज़ा इलाक़ों की तमाम मसाजिद में अज़ान पर पाबंदी का निफ़ाज़ अमल में लाना है। दूसरी जानिब फ़िलिस्तीनी शहरियों ने इस्राईल के इस ज़ालिमाना, नस्ल परस्ताना और इस्लाम दुश्मन इक़दाम के ख़िलाफ़ शदीद एहतेजाज किया है। मरकज़े इत्तेलाआत फ़िलिस्तीन के मुताबिक़ सहयूनी केनेसेट में ज़ेरे बहस मुसव्वद-ए-क़ानून एक शिद्दत पसन्द इस्राईली सियासी जमाअत ''लेकोड'' के रुकन की जानिब से जमा कराया गया है। क़ानून के मुसव्वदे में कहा गया है कि मक़बूज़ा इलाक़ों में मसाजिद में लगे लाउडस्पीकर से यहूदी आबादकारों के आराम व सुकून में ख़लल पड़ रहा है। लेहाज़ा पार्लियामेण्ट तमाम मसाजिद में अज़ान या उनमें लगे बेरूनी लाउडस्पीकरों के इस्तेमाल पर पाबन्दी लगाये ताकि यहूदी आबादकारों के आराम व सुकून को यक़ीनी बनाया जा सके। दूसरी जानिब मुफ़्ती-ए-आज़म फ़िलिस्तीन अश-शैख़ मुहम्मद हुसैन ने मसाजिद में अज़ानों पर पाबंदी को इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ मुनज़्ज़म साज़िश क़रार दिया है। एक बयान में उन्होंने कहा कि इस्राईल एक जानिब मक़बूज़ा बैतुलमुक़द्दस की तमाम मसाजिद को मिस्मार करके फ़िलिस्तीन और इस्लाम दुश्मनी का सुबूत फ़राहम कर रहा है और दूसरी जानिब मक़बूज़ा फ़िलिस्तीनी इलाक़ों की तमाम मसाजिद की अज़ानों पर पाबन्दी आएद करना है।'' शैख़ मोहम्मद हुसैन का कहना है कि मसाजिद पर हमले हों या अज़ानों पर पाबन्दी के निफ़ाज़ के लिए क़ानून साज़ी जैसी शर-अंगेज़ी हो सेहयूनी हुकूमत ने तमाम आसमानी मज़ाहिब की तालीमात को दीवार पर दे मारा है। मसाजिद में अज़ानों पर पाबन्दी का क़ानून आलमी क़वानीन की भी संगीन ख़िलाफ़वर्ज़ी है। इसका मक़सद फ़िलिस्तीन में यहूदी बस्तियों की तौसी करते हुए फ़िलिस्तीनियों के लिए फ़िज़ा तंग करना है। शैख़ मोहम्मद हुसैन ने आलमी बिरादरी पर ज़ोर दिया कि वह क़ाबिज़ सेहयूनी हुकूमत को मुक़द्दस मक़ामात पर दस्त-दराज़ी से बाज़ रखने के लिए इस्राईल पर दबाव डलवाए।

## हमारे पास जो कुछ है वह इमाम हुसैन[अ०] ही का है: हुज्जतुल इस्लाम सै० हसन नसरुल्लाह

हिज़्बुल्लाह लेबनान के सरबराह सै० हसन नसरुल्लाह ने मजलिसे अज़ा से ख़िताब में कहा है कि इमाम ख़ुमैनी[रह०] की क़यादत में कामयाब होने वाले इस्लामी इंक़ेलाब का सरचश्मा इंक़ेलाबे हुसैनी है और इमाम ख़ुमैनी ने फ़रमाया है कि हमारे पास जो कुछ है वह इमाम हुसैन[अ०] के आशूरा से है। सै० हसन नसरुल्लाह ने हज़रत इमाम हुसैन[अ०] की सीरत व ज़िंदगी और करबला पर रौशनी डालते हुए कहा कि इस्लामी इंक़ेलाब से क़ब्ल ईरान, अमरीका की कालोनी था और सहयूनी हुकूमत के साथ शाह के बेहतरीन ताल्लुक़ात थे, इसी बिना पर इमाम ख़ुमैनी[रह०] ने अपने जद हज़रत सैय्यदुश्शोहदा के नक़्शे क़दम पर चलते हुए क़याम किया। उन्होंने कहा कि अगर इमाम ख़ुमैनी[रह०] ख़ामोश बैठ जाते तो ईरान में इस्लाम बाक़ी न बचता। क्योंकि ईरान में इस्लाम को ख़तरे लाहक़ हो चुके थे लेहाज़ा इमाम ख़ुमैनी ने शाह के मुक़ाबिल क़्याम किया। सै० हसन नसरुल्लाह ने यह सवाल पेश किया कि किस तरह एक अकेला शख़्स मग़रिब व इसराईल यहाँ तक कि अरबों की हिमायत-याफ़्ता हुकूमत के सामने उठ खड़ा होता है? उन्होंने कहा कि ख़ुद इमाम ख़ुमैनी ने यह कहकर कि हमारे पास जो कुछ है इमाम हुसैन[अ०] और आशूरा से है इस सवाल का जवाब दिया है। उन्होंने कहा कि इराक़ में आयतुल्लाह सै० मोहसिनुल हकीम और आयतुल्लाह सै० मोहम्मद बाक़रुस्सद्र की तहरीकें और लेबनान में इमाम मूसा सद्र की तहरीक हज़रत इमाम हुसैन[अ०] के इंक़ेलाब से मुतास्सिर और उनके नक़्शे क़दम पर थी। सै० हसन नसरुल्लाह ने हिज़्बुल्लाह को भी इंक़ेलाबे करबला से मुतास्सिर क़रार दिया और कहा कि हमारे जवान हज़रत अली अकबर[अ०] और हमारे बच्चे हज़रत अली असग़र[अ०] और हमारे बूढ़े हबीब इब्ने मज़ाहिर[अ०] के नक़्शे क़दम पर गामज़न हैं और इन ही जज़्बात के तहत हम अटठाइस बरसों के बाद भी जबकि हमारे ख़िलाफ़ तरह-तरह की साज़िशें जारी हैं इस्तेक़ामत का सुबूत दे रहे हैं। सै० हसन नसरुल्लाह ने हिज़्बुल्लाह के साबिक़ सरबराह सै० अब्बास मूसवी की शख़सियत पर रौशनी डालते हुए कहा कि उन्होंने अपना सब कुछ हिज़्बुल्लाह के लिए लुटा दिया।

# पार्लियामेण्ट और काबीना का बाइकाट न ख़त्म किया तो तमाम वज़ीरों को बरतरफ़ कर देंगे: इराक़ी वज़ीरे आज़म

इराक़ी वज़ीरे आज़म नूरुल मालिकी ने कुर्दों से मुतालबा किया है कि वह इराक़ के नाएब वज़ीरे आज़म तारिक़ुल हाश्मी को हुक्काम के हवाले कर दें। अमरीकी फ़ौजियों की इराक़ से रवानगी के अगले दिन ही दहशतगर्दी के इल्ज़ामात में तारिक़ अलहाश्मी की गिरफ़्तारी के वारेंट जारी किए गये थे। ताहम उन्होंने सेक्योरिटी अहलकारों पर हमलों में मुलव्विस होने के इल्ज़ामात को मुस्तरद करते हुए कहा है कि वह किसी क़िस्म की दहशतगर्द कार्यवाही में मुलव्विस नहीं हैं। तारिक़ अलहाश्मी इराक़ में सुन्नीउल मसलक के सीनियर सियासतदान हैं और वह इस वक़्त शिमाली इराक़ में हैं जो कि कुर्दों के ज़ेरे इन्तेज़ाम नीम ख़ुदमुख़्तार इलाक़ा है। इधर अमरीका के नाएब वज़ीरे आज़म जोबाइडन ने इराक़ी रहनुमाओं से कहा है कि वह ताज़ा फ़िरक़ा वाराना कशीदगी से बचने के लिए मिलजुल कर काम करें। इराक़ी टी०वी० पर बराहे रास्त दिखाई जाने वाली प्रेस कांफ्रेंस में इराक़ के शिया वज़ीरे आज़म ने कहा कि अगर इराक़िया ने, जो कि सुन्नियों का सबसे बड़ा सियासी गिरोह है, पार्लियामेण्ट और काबीना का बाइकाट ख़त्म न किया तो वह उनके तमाम वज़ीरों को बरतरफ़ कर देंगे। वज़ीरे आज़म ने तमाम सियासी धड़ों को इस बोहरान को हल करने के लिए मुज़ाकरात की दावत दी है। उन्होंने कहा कि अगर मुज़ाकरात कामयाब न हुए तो इराक़ में मुस्तक़बिल में अक्सरियत से बनाई हुई हुकूमत आ सकती है और मुल्क को मुस्बत सिम्त में ले जाने के लिए हर किसी को हुकूमत के साथ इत्तेहाद का हक़ होगा। तारिक़ अलहाश्मी ने अपने ख़िलाफ़ किसी भी कार्यवाही के लिए अरब लीग की निगरानी माँगी है। इस से मुताल्लिक़ एक सवाल का जवाब देते हुए वज़ीरे आज़म ने कहा कि यह इराक़ का एक अन्दुरूनी फ़ौजदारी मामला है और उन्हें अरब लीग या अक़वामे मुत्तहेदा की मुदाख़लत की कोई वजह नज़र नहीं आती।

# हसन नसरुल्लाह ने शामी अपोज़ीशन की मज़म्मत कर दी

लेबनान की शिया तंज़ीम हिज़्बुल्लाह के सरबराह हुज्जतुल इस्लाम सै० हसन नसरुल्लाह ने अपने इत्तेहादी शाम के बशारुल असद की आख़िरी दम तक हिमायत जारी रखने के अज़्म का इज़्हार किया है। हसन नसरुल्लाह ने यौमे आशूर के मौक़े पर अपने हामियों से ख़िताब करते हुए कहा कि "हम ने बिल्कुल आग़ाज़ में यह बात वाज़ेह कर दी थी कि हम शामी हुकूमत के साथ हैं और यह हुकूमत इसराईल के ख़िलाफ़ एक मुज़ाहमतकार है।" उनकी यह तक़रीर लेबनानी दारुलहुकूमत बैरूत के जुनूबी इलाक़े में नसब एक बड़ी स्क्रीन के ज़रिए नशर की गई और वहाँ हज़ारों अहले तशैय्यो उनकी तक़रीर सुनने के लिए जमा थे। उन्होंने तक़रीर में शाम की हिज़्बे मुख़ालिफ़ जमाअतों पर मुश्तमिल शामी क़ौमी काउंसिल पर कड़ी नुक्ताचीनी की और कहा कि यह काउंसिल शाम को तबाह करना चाहती है। हिज़्बुल्लाह के सरबराह ने कहा कि "इस्तम्बोल में क़ाएम की जाने वाली शामी काउंसिल और उसके सदर बुरहान ग़लियोन अमरीका और इसराईल के सामने ख़ुद को अपने इस्नाद समेत पेश करने की कोशिश कर रहे हैं।" उन्होंने यह बात बुरहान ग़लियोन के एक अख़बारी इण्टरव्यु के रद्दे अमल में कही है जिसमें उन्होंने कहा था कि अगर शाम में हिज़्बे इख़्तेलाफ़ की हुकूमत क़ाएम हो जाती है तो वह ईरान, हिज़्बुल्लाह और फिलिस्तीनी तंज़ीम हमास से अपना नाता तोड़ लेगी। छियासठ साला प्रोफ़ेसर ने अमरीकी रोज़नामा वाल-स्ट्रीट जरनल में गुज़श्ता जुमे को शाय-शुदा इण्टरव्यु में कहा था कि "ईरान के साथ शाम के कोई ख़ास ताल्लुक़ात नहीं रहेंगे। ख़ुसूसी ताल्लुक़ात को तोड़ने का मतलब तज़वीराती और फ़ौजी इत्तेहाद को तोड़ना है। मौजूदा शामी हुकूमत के ख़ात्मे के बाद शाम के हिज़्बुल्लाह के साथ इस तरह के तअल्लुक़ात नहीं रहेंगे।"